



## दैनिक संपादकीय विश्लेषण

### विषय

भारतीय न्याय प्रणाली में सुधार की  
आवश्यकता

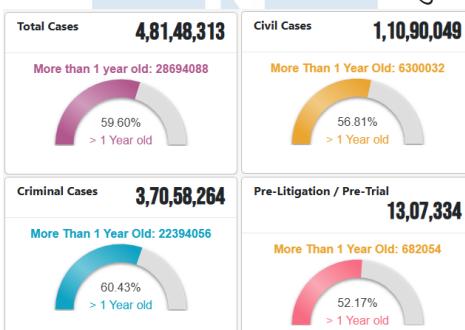
## भारतीय न्याय प्रणाली में सुधार की आवश्यकता

### संदर्भ

- भारत की न्यायिक प्रणाली में तत्काल सुधार की आवश्यकता है, क्योंकि विभिन्न न्यायालयों में 4.8 करोड़ से अधिक मामले लंबित हैं, जिनमें से कुछ दशकों से लंबित हैं।

### भारतीय न्यायपालिका में लंबित मामले

- राष्ट्रीय न्यायिक डेटा ग्रिड (NJDG) के नवीनतम आँकड़ों के अनुसार:
  - भारत का सर्वोच्च न्यायालय:** लगभग 82,500 मामले लंबित हैं, जिनमें से लगभग 50% एक वर्ष से अधिक पुराने हैं।
  - भारत के उच्च न्यायालय:** लगभग 60 लाख मामले लंबित हैं, जिनमें से लगभग 55% एक वर्ष से अधिक पुराने हैं।
    - इलाहाबाद और बॉम्बे उच्च न्यायालय:** अकेले ही संयुक्त रूप से 17 लाख से अधिक लंबित मामलों का हिसाब रखते हैं।
  - भारत के जिला न्यायालय:** लगभग 4.8 करोड़ मामले लंबित हैं, जिनमें से 59.76% एक वर्ष से अधिक पुराने हैं।
    - शीर्ष राज्य (लंबित मामलों में):** उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार, पश्चिम बंगाल और राजस्थान।
- मामलेवार वितरण:**
  - दीवानी मामले:** 1.1 करोड़ लंबित; 56.91% एक वर्ष से अधिक पुराने।
  - आपराधिक मामले:** 3.7 करोड़ लंबित; 60.62% एक वर्ष से अधिक पुराने।
  - पूर्व-विवाद मामले:** 13 लाख लंबित; 52.37% एक वर्ष से अधिक पुराने।



### न्यायिक बैकलाँग के प्रमुख कारण

- न्यायाधीशों की कमी:** सीमित पीठ शक्ति (34 न्यायाधीश) बनाम प्रति वर्ष 70,000 से अधिक मामलों का प्रवाह।
  - उच्च न्यायालयों में लगभग 30% और जिला न्यायालयों में 20% पद रिक्त हैं।
  - भारत में प्रति दस लाख लोगों पर केवल लगभग 21 न्यायाधीश हैं, जबकि अनुशांसित संख्या 50 है।
- कम निपटान दर:** पिछले महीने केवल 12.8 लाख मामले निपटाए गए, जबकि लगभग 20 लाख नए मामले दर्ज हुए।
- प्रक्रियात्मक विलंब और अक्षमताएँ:** विशेष अनुमति याचिकाएँ (SLPs), बार-बार स्थगन, खराब दस्तावेजीकरण और अपर्याप्त डिजिटल केस प्रबंधन।
  - मैनुअल प्रक्रियाएँ, पुरानी केस प्रबंधन प्रणाली और स्वचालन की कमी न्याय वितरण को धीमा करती हैं।
- न्यायाधीश नियुक्तियों में विलंब:** कोलेजियम सिफारिशों से नियुक्तियों में देरी।
- अवसंरचना की कमी:** कई न्यायालयों में बुनियादी सुविधाओं, डिजिटल उपकरणों और पर्याप्त कर्मचारियों की कमी।
  - रिकॉर्ड का अधूरा डिजिटलीकरण और न्यायालयों के बीच डेटा का कमज़ोर समन्वय।

- **ADR का सीमित उपयोग:** वैकल्पिक विवाद समाधान (ADR) और लोक अदालतों का अपर्याप्त उपयोग।
- **महामारी बैकलॉग:** COVID-19 लॉकडाउन ने 2020–2022 के बीच 30 लाख से अधिक लंबित मामले जोड़ दिए।

### लंबित मामलों के उच्च स्तर के प्रभाव

- **आर्थिक और व्यापारिक व्यवधान:** धीमी न्यायपालिका आर्थिक जीवन्तता को बाधित करती है। निवेशक — घरेलू और विदेशी — ऐसे बाज़ार में प्रवेश करने से हिचकते हैं जहाँ अनुबंध प्रवर्तन में औसतन चार वर्ष से अधिक लगते हैं।
  - ▲ वर्ल्ड बैंक के ईज़ ऑफ़ डूइंग बिज़नेस इंडेक्स के अनुसार, 'कॉन्ट्रैक्ट्स लागू करने' में भारत का प्रदर्शन खराब है।
  - ▲ आर्थिक पुनरुत्थान वहाँ फल-फूल नहीं सकता जहाँ कानून का शासन बाज़ारों की तुलना में धीमा चलता है।
- **न्याय में देरी का अर्थ न्याय से वंचित होना:** लंबी मुकदमेबाजी कानूनी प्रणाली की विश्वसनीयता को कम करती है। पीड़ित और आरोपी दोनों अनिश्चितता और मानसिक तनाव से पीड़ित होते हैं।
  - ▲ **प्रभावित कमज़ोर समूह:**
    - **महिलाएँ:** लंबित मामलों में 8% महिलाओं द्वारा दायर किए गए हैं।
    - **वरिष्ठ नागरिक:** लंबित मामलों में 7% वरिष्ठ नागरिकों से संबंधित हैं।
- **न्यायिक संसाधनों पर दबाव:** न्यायाधीश जटिल मामलों को पर्याप्त समय नहीं दे पाते, जिससे निर्णयों की गुणवत्ता प्रभावित होती है।
- **विवादों का चक्र:** सरकार सबसे बड़ी वादी है, जो लगभग 50% मामलों में योगदान देती है। इससे एक दुष्क्र क्र बनता है जहाँ नए मामले निपटान से अधिक होते हैं, जिससे बैकलॉग और बढ़ता है।

### सुधार उपाय

- **ई-कोर्ट्स चरण III (2023–2027):** एकीकृत केस डेटा और एआई-आधारित केस लिस्टिंग प्रणाली।
- **राष्ट्रीय न्यायिक अवसंरचना प्राधिकरण (NJIA):** न्यायालय परिसरों के वित्तपोषण और निर्माण को सुव्यवस्थित करने हेतु।
- **फास्ट-ट्रैक कोर्ट्स:** देशभर में 1,023 संचालित, मुख्यतः महिलाओं और बच्चों से संबंधित अपराधों के लिए।
- **एआई पहल:** SUPACE (SC) और SUVAS (अनुवाद एआई) जैसे प्रोजेक्ट्स मानव कार्यभार को कम करने हेतु।
- **वर्चुअल सुनवाई विस्तार:** महामारी के बाद सर्वोच्च न्यायालय और 25 उच्च न्यायालयों में जारी।

### आगे की राह: न्यायपालिका में व्यापक सुधार

- **अनुबंध प्रवर्तन:** निवेशक अनुबंधों के प्रवर्तन से विश्वास को मापते हैं।
  - ▲ यदि भारत को अपनी विकास गति बनाए रखनी है, तो न्यायिक गति को आर्थिक महत्वाकांक्षा के साथ सामंजस्यशील होगा।
  - ▲ न्याय प्रक्रिया में अनंत नहीं हो सकता, बल्कि वादे में त्वरित होना चाहिए — दोनों साथ नहीं चल सकते।
- **न्याय से क्षरण तक:** भारत की कानूनी प्रणाली अपील की परत दर परत अनुमति देती है, और छोटे विवाद पूरे न्यायिक पिरामिड तक पहुँच जाते हैं, जिससे उच्च न्यायालय जाम हो जाते हैं।
  - ▲ अपीलों को केवल उन मामलों तक सीमित करना चाहिए जिनमें कानून या संवैधानिक महत्व के महत्वपूर्ण प्रश्न शामिल हों।
- **तुलनात्मक मॉडल:** सिंगापुर और यूके जैसे देशों में दक्षता और निष्पक्षता साथ-साथ मौजूद हैं।

- **भारतीय बार काउंसिल (BCI) में सुधार:** यह अब भी 1961 के ढाँचे में फंसा हुआ है।
  - ▲ भारत के श्रेष्ठ विधि विद्यालयों से आए युवा पेशेवर निष्पक्ष अवसरों के लिए संघर्ष करते हैं।
  - ▲ वंश और संपर्क, योग्यता से अधिक सफलता तय करते हैं। अदालतों में 'फेस वैल्यू' तैयारी से अधिक महत्व रखता है।
- **भारतीय न्यायिक सेवा (IJS):** इसकी स्थापना अवसरों का लोकतंत्रीकरण कर सकती है और संपर्कों पर योग्यता को प्राथमिकता दे सकती है।
- **एडवोकेट्स (संशोधन) विधेयक, 2025:** सीमित सरकारी प्रतिनिधित्व के माध्यम से जवाबदेही लाने का प्रयास किया गया, लेकिन स्वायत्तता के नाम पर अस्वीकार कर दिया गया।
  - ▲ स्वायत्तता बिना जवाबदेही के अस्पष्टता उत्पन्न करती है, स्वतंत्रता नहीं।
- **कनिष्ठ अधिवक्ताओं के पेशे में निष्पक्षता**
  - ▲ अनिवार्य वृति और प्रशिक्षु अनुबंधों को संस्थागत किया जाना चाहिए।
  - ▲ ब्हिसल-ब्लोअर सुरक्षा और POSH अनुपालन सार्वभौमिक होना चाहिए।
  - ▲ एक स्वतंत्र शिकायत निवारण न्यायाधिकरण को राजनीतिक बार तंत्रों की जगह लेनी चाहिए।
- **कानूनी पेशा विनियमन विधेयक:** भारत को इसकी आवश्यकता है ताकि मानकीकृत वेतन संरचनाएँ, अनिवार्य सतत कानूनी शिक्षा, बार काउंसिलों का स्वतंत्र ऑडिट और वरिष्ठ अधिवक्ता पदनामों के लिए पारदर्शी मानदंड लाए जा सकें।
- **सुधार वहाँ से शुरू होना चाहिए जहाँ देरी शुरू होती है**
- स्थगन सीमित और उचित होना चाहिए।
- विलंबित निर्णयों के लिए जवाबदेही लागू की जानी चाहिए।
- एआई-आधारित केस क्लस्टरिंग और डिजिटाइज्ड डॉकेट प्रबंधन को मैनुअल, कागज-प्रधान प्रक्रियाओं की जगह लेनी चाहिए।
- यदि ऐसे समयबद्ध सुधार नहीं किए गए, तो न्यायपालिका न्याय का माध्यम न होकर देरी का स्मारक बन जाएगी।

### दैनिक मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

**प्रश्न:** भारतीय न्यायिक प्रणाली के सामने प्रमुख चुनौतियों की समीक्षा कीजिए। सभी के लिए समयबद्ध और सुलभ न्याय सुनिश्चित करने हेतु किन सुधारों की आवश्यकता है?

Source: BL

